हिंदी भाषा के विशेषण शब्दों में परिवर्तनीयता

सीताराम गुप्ता

सारांश: हिंदी देश के एक विस्तृत भूभाग पर बोली जाने वाली भाषा है। हिंदी की जितनी बोलियाँ, उपबोलियाँ व शैलियाँ हैं दुनिया की किसी भाषा में नहीं मिलतीं। यही कारण है कि हिंदी व्याकरण में अपवाद भी बहुत मिलते हैं। बोलियों अथवा उपबोलियों में भाषा की व्याकरणिक संरचना में अंतर होना स्वाभाविक है लेकिन मानक हिंदी में भी इस प्रकार के अंतर और अपवादों की कमी नहीं। किसी वाक्य में किसी शब्द का रूपांतरण हो जाता है तो उसी प्रकार की व्याकरणिक इकाई वाले दूसरे शब्दों का रूपांतरण नहीं होता अथवा भिन्न प्रकार से होता है। कई बार हम इसे अपवाद मान लेते हैं। कई बार अपवाद होते भी हैं लेकिन इसके मूल में प्रायः नियमों की सही जानकारी का अभाव ही होता है। इसके लिए शब्दों की सही व्युत्पत्ति व प्रकृति को जानना-समझना अनिवार्य है। हिंदी में संस्कृत के तत्सम शब्दों के अतिरिक्त तद्भव व देशज शब्दों के साथ-साथ विदेशी शब्द भी हैं। विदेशी शब्दों में उर्दू के माध्यम से हिंदी में आए अरबी और फ़ारसी के शब्दों की तो भरमार ही है जिनकी प्रकृति तत्सम व तद्भव शब्दों से भिन्न है। इस आलेख में विशेषण शब्दों की परिवर्तनीयता व अरबी-फ़ारसी के अपरिवर्तनीय विशेषण शब्दों पर विशेष रूप से विचार किया गया है। इससे न केवल विशेषण शब्दों का सही रूपांतरण करना आसान होगा अपितु पढ़ते समय अरबी-फ़ारसी के विशेषण शब्दों को पहचाना भी सरल हो जाएगा।

बीज शब्द: अच्छा-ख़ासा, अनुनासिकांत, अपरिवर्तनीय, अरबी-फ़ारसी, आकारांत, आवारा, एकारांत, ख़स्ता, चुनिंदा, ताज़ा, दोचश्मी हे, नाकर्दा, परिवर्तनीय, बोसीदा, मस्ताना, लापता, विकार, विशेषण, विशेष्य, संजीदा, सविभक्तिक, हिंदी व्याकरण.

मुख्य आलेख: मन्नू भंडारी की आत्मकथा ''एक कहानी यह भी'' में एक वाक्य है, ''जन्मी तो मध्य प्रदेश के भानपुरा में थी, लेकिन मेरी यादों का सिलसिला शुरू होता है अजमेर के ब्रह्मपुरी मोहल्ले के उस दो मंज़िला मकान से, जिसकी ऊपरी मंज़िल में पिता का साम्राज्य था। इस वाक्य में एक वाक्यांश है ''दो मंज़िला मकान से''। यहाँ दो मंज़िला विशेषण है और मकान विशेष्य है। प्रायः विशेष्य (संज्ञा) के बाद परसर्ग अथवा विभक्ति चिह्न लग जाने पर विशेषण परिवर्तित हो जाता है यदि वह आकारांत हो। एक उदाहरण देखिए: हमारा घर बहुत बड़ा है। अब इसका सविभक्तिक रूप देखिए: हम बहुत बड़े घर में रहते हैं। इस वाक्य में विशेषण शब्द 'बड़ा' परिवर्तित होकर 'बड़े' में बदलकर एकारांत हो जाता है लेकिन ''दो मंज़िला मकान से'' वाक्यांश में ''दो मंज़िला'' विशेषण शब्द ''दो मंज़िले'' में परिवर्तित नहीं होता। क्या ''दो मंज़िले'' लिखना अशुद्ध होगा? हाँ, ''दो मंज़िले'' लिखना अशुद्ध होगा। यदि ''दो मंज़िले'' लिखना अशुद्ध है तो फिर ''हम बहुत बड़े घर में रहते हैं'' लिखना कैसे शुद्ध हुआ? आइए इस प्रश्न का सही उत्तर जानने के साथ-साथ अन्य अपरिवर्तनीय विशेषण शब्दों के विषय में भी विस्तारपूर्वक जानने का प्रयास करते हैं।

कई बार हम लिखा देखते हैं कि ताज़े फल और सब्ज़ियाँ सेहत के लिए अच्छी होती हैं। यहाँ ''ताज़े फल और सब्ज़ियाँ'' में विशेषण के रूप में ताज़े अथवा ताज़ी लिखना अशुद्ध है क्योंकि ताज़ा एक अपरिवर्तनीय विशेषण शब्द है। लिंग-वचन ही नहीं सविभक्तिक विशेष्य के साथ भी ताज़ा ताज़ा ही रहेगा, बदलेगा नहीं जैसे ताज़ा भोजन, ताज़ा रोटी, ताज़ा रसगुल्ले, ताज़ा मिठाइयाँ अथवा ताज़ा सब्ज़ियों के भाव बढ़े। ऊपर से देखने पर तो ऐसे लगता है कि मीठा, मीठी और मीठे रूपों की तरह ही ताज़ा, ताज़ी और ताज़े रूप भी ठीक हैं लेकिन ऐसा नहीं है। जब मीठा का मीठी और खट्टा का खट्टी हो सकता है तो ताज़ा का ताज़ी क्यों नहीं हो सकता? वास्तव में विकार की दृष्टि से अपरिवर्तनीय और परिवर्तनीय विशेषण शब्दों में अंतर विषयक स्पष्ट जानकारी के अभाव में ही हम कई बार विशेषण शब्दों के सही रूप लिखने में ग़लती कर बैठते हैं। अब प्रश्न उठता है कि कौन-से विशेषण शब्द अपरिवर्तनीय हैं और कौन-से विशेषण शब्द परिवर्तनीय हैं?

विकार की दृष्टि से विशेषण शब्दों का वर्गीकरण अत्यंत सरल है। हिंदी में व्यवहृत कुल विशेषण शब्दों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है - एक आकारांत शब्द और दूसरे जो आकारांत नहीं हैं जैसे अकारांत, इकारांत, ईकारांत, उकारांत व ऊकारांत, ओकारांत आदि। हिंदी में केवल आकारांत विशेषण शब्दों में विशेष्य के लिंग व वचन के अनुसार परिवर्तन अथवा विकार होता है और उसमें भी सभी आकारांत शब्दों में नहीं। आकारांत शब्दों में केवल तत्सम, तद्भव व देशज शब्दों में विकार होता है लेकिन उनमें भी कुछ अपवाद मिलते हैं। इसके अतिरिक्त जिन आकारांत शब्दों में बिलकुल विकार नहीं होता वे हैं अरबी व फ़ारसी भाषाओं के हिंदी में व्यवहृत शब्द। हिंदी के अकारांत, इकारांत, ईकारांत, उकारांत व ऊकारांत आदि विशेषण शब्दों की तरह ही अरबी व फ़ारसी के आकारांत विशेषण शब्दों में भी विशेष्य के लिंग-वचन के अनुसार कोई विकार नहीं होता। विशेषण के रूप में वे हर स्थिति में अपरिवर्तित रहते हैं।

यहाँ ध्यान देने योग्य बात ये है कि परिवर्तनीय आकारांत विशेषण शब्द पुल्लिंग एकवचन होता है और उसका बहुवचन रूप एकारांत हो जाता है जैसे मीठा से मीठे और लंबा से लंबे। आकारांत पुल्लिंग एकवचन शब्द का स्त्रीलिंग रूप ईकारांत हो जाता है और स्त्रीलिंग बहुवचन रूप भी समान रहता है जैसे लंबी लड़की व लंबी लड़कियाँ। सविभक्तिक रूप में विशेष्य तो पुनः परिवर्तित हो जाता है लेकिन विशेषण नहीं बदलता। परिवर्तनीय विशेषण शब्दों में परिवर्तन के मात्र यही नियम हैं और यही तीन स्थितियाँ हैं जिसे जानना अत्यंत सरल है। मुख्य बात ये है कि कुछ अपवादों को छोड़ दें तो केवल आकारांत विशेषण शब्द ही परिवर्तित होते हैं लेकिन आकारांत विशेषण शब्दों में भी कुछ ऐसे शब्द हैं जो परिवर्तित नहीं होते। प्रमुख समस्या है उन आकारांत शब्दों की पहचान करने की जिनमें परिवर्तन नहीं होता और जो ग़लतियाँ होती हैं केवल इन्हीं शब्दों की ठीक से पहचान न होने के कारण होती हैं। आइए ऐसे शब्दों पर विचार करते हैं।

आकारांत अपरिवर्तनीय विशेषण शब्द:

यदि मोटे तौर पर देखा जाए तो फ़ारसी के सभी प्रकार के विशेषण अपरिवर्तनीय होते हैं और मध्यकाल में इनके प्रभाव से हिंदी में आकारांत शब्दों को छोड़कर अन्य सभी प्रकार के विशेषण शब्द अपरिवर्तित रूप में प्रयोग किए जाने लगे। संस्कृत में ऐसा नहीं था। संस्कृत में विशेषण विशेष्य के लिंग व वचन के अनुसार ही परिवर्तित होते हैं। इस समय हिंदी में आकारांत शब्दों को छोड़कर अन्य सभी प्रकार के शब्द अपरिवर्तनीय अथवा अविकारी हैं और आकारांत अपरिवर्तनीय विशेषण शब्दों में अधिकांश वे अरबी-फ़रसी के शब्द हैं जो उर्दू के माध्यम से हिंदी में आए हैं। अरबी-फ़ारसी के इन शब्दों के अंत में आ के बजाय अः होता है जो उर्दू में दोचश्मी हे से लिखा जाता है जैसे ताज़ः, सादः, ख़स्तः वग़ैरा। उर्दू में लिखा जाने वाला दोचश्मी हे अर्थात् अः हिंदी में आकर आ हो गया है इसलिए हिंदी में ताज़ः, सादः अथवा ख़स्तः के बजाय ताज़ा, सादा व ख़स्ता ही लिखा जाता है। इसी से उर्दू भाषा अथवा लिपि न जानने वालों के लिए उसकी पहचान करना कठिन ही नहीं असंभव-सा ही होता है।

ऐसे ही एक शब्द का उल्लेख पहले किया जा चुका है और वो शब्द है ताज़ा। जो चीज़ बासी न हो वो ताज़ा होती है। पानी भी ताज़ा होता है और रोटी भी ताज़ा होती है। फल भी ताज़ा होते हैं और सब्ज़ियाँ भी ताज़ा होती हैं। सेब भी ताज़ा होता है तो मौसमी भी ताज़ा होती है। अंगूर भी ताज़ा होते हैं तो फालसे भी ताज़ा होते हैं। दूध, दही, शरबत, चाय, कॉफी, लस्सी, मक्खन, घी, खोया, पनीर, अचार, चटनी, आटा, चीनी, चावल, दालें, मिर्च-मसाले, फूल-पत्तियाँ, मांस, मछली, अंडे ही नहीं ब्रेड, बिस्कुट, केक, कुकीज, चॉकलेट, चिप्स, पेस्ट्री, पिज़्ज़ा, बर्गर, आइसक्रीम सब ताज़ा होते हैं। कहने का तात्पर्य यही है कि हर चीज़ चाहे वो पुल्लिंग हो अथवा स्त्रीलिंग या एकवचन हो अथवा बहुवचन ताज़ा होती है व किसी भी सूरत में ताज़ी अथवा ताज़े नहीं बोली जाती। हाल की लिखी हुई कहानी भी ताज़ा होती है तो पहले से न सुनी हुई ख़बरें भी ताज़ा होती हैं। जानकारी भी ताज़ा हो सकती है तो वारदात, झगड़े और हादसे भी ताज़ा हो सकते हैं।

दिनांक 29 अप्रैल 2023 को एक समाचार में पढ़ा कि यूक्रेन के विदेश मंत्री दिमित्री कुलेबा ने कहा कि रूस की ताज़ा बमबारी से साफ़ है कि रूस की शांति समझौते में कोई दिलचस्पी नहीं है। तो बमबारी भी ताज़ा हो सकती है और बमबारी ताज़ा हो सकती है तो हमला भी ताज़ा हो सकता है। ताज़ा की तरह ही हालिया भी एक अपरिवर्तनीय विशेषण है अर्थात् हालिया शब्द भी अपने विशेष्य के लिंग व वचन से निरपेक्ष रहता है। हालिया बयान भी हो सकता है और हालिया नतीजे भी हो सकते हैं। हालिया जैसा ही एक अन्य विशेषण शब्द है मौजूदा। मौजूदा विशेषण भी लिंग-वचन के अनुसार पूर्णतः अपरिवर्तित रहता है। ताज़ा, हालिया और मौजूदा जैसा ही एक शब्द है ख़स्ता। खाजा भी ख़स्ता होता है तो अनरसे भी ख़स्ता होते हैं। एक कचौड़ी भी ख़स्ता होती है तो बहुत सारी कचौड़ियाँ भी ख़स्ता होती हैं। बालूशाही भी ख़स्ता होती हैं और मट्ठियाँ भी ख़स्ता होती हैं। नमकीन भी ख़स्ता होती है तो नमकपारे और शक्करपारे भी ख़स्ता होते हैं। पूरी, पराँठे, पापड़ी, समोसे, गुजिया, चिरोटे, खजूर, सतपुरे सभी ख़स्ता होते हैं।

ताज़ा और ख़स्ता की तरह एक अन्य शब्द है पुख़्ता। ये भी लिंग व वचन के अनुसार अपरिवर्तनीय है। पुख़्ता इंतज़ाम, पुख़्ता इलाज, पुख़्ता रंग, पुख़्ता सबूत, पुख़्ता बंदोबस्त, पुख़्ता जानकारी, पुख़्ता नींव, पुख़्ता स्याही, पुख़्ता सड़क, पुख़्ता सड़कें, पुख़्ता इंतिज़ामात, पुख़्ता काग़ज़ात वग़ैरा इन सभी विशेषण-विशेष्य शब्द-युग्मों के साथ विशेषण के रूप में पुख़्ता का एक ही रूप बना रहता है। एक समाचार पढ़ने को मिला - पुख़्ता सुरक्षा इंतज़ामात के दावे के साथ 15 अगस्त की तैयारियों में जुटी दिल्ली पुलिस को उसके ही एक असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर ने हलकान कर दिया। यहाँ इंतज़ामात के साथ विशेषण के रूप में पुख़्ता का सही प्रयोग किया गया है। ऐसा ही एक अन्य समाचार है जिससे पता चलता है कि पुख़्ता अपरिवर्तनीय विशेषण है। लिखा है कि ऐसी ड्रग (ऐंटीबायोटिक एजिथ्रोमाइसिन) का इस्तेमाल उसी सूरत में किया जाना चाहिए जब किसी मरीज़ की जान संकट में हो और उसके अंदर अज्ञात बैक्टीरिया का पुख़्ता संदेह हो।

दिनांक 04:09:2022 के नवभारत टाइम्स में सेंट्रल विस्टा एवेन्यू विषयक एक समाचार में लिखा है - यहाँ पर पैदल चलने वालों के लिए ख़ासे इंतज़ाम किए गए हैं। उससे आगे लिखा है - बताया जा रहा है कि सेंट्रल विस्टा एवेन्यू की शुरुआत होने के कम से कम एक महीने बाद तक यहाँ पुलिस का ख़ासा इंतज़ाम रहेगा। दो वाक्यों में एक विशेषण शब्द ख़ासा के दो रूप दिए गए हैं - ख़ासा इंतज़ाम और ख़ासे इंतज़ाम। वास्तव में विशेषण के रूप में ख़ासा शब्द वचन व लिंग के अनुसार अपरिवर्तनीय होता है अतः ख़ासा ही रहता है। इसके बावजूद 10:09:2022 को लिखा है कि कर्तव्य पथ के दोनों ओर तैयार किए गए हरे-भरे लॉन्स में पहले ही दिन लोगों की ख़ासी रौनक़ दिखी। आगे लिखा है कि कर्तव्य पथ देखने के लिए आने वालों की भारी भीड़ की संभावना को देखते हुए सुरक्षा के ख़ासे इंतज़ाम किए गए हैं। वास्तव ख़ासा का ख़ासी व ख़ासे रूपांतरण नहीं हो सकता। ख़ासा हमेशा ख़ासा ही रहेगा।

लेकिन यही ख़ासा जब अच्छे के साथ मिलकर अच्छा-ख़ासा हो जाता है तो अच्छे के प्रभाव से परिवर्तनीय बन जाता है जैसे अच्छा-ख़ासा, अच्छी-ख़ासी और अच्छे-ख़ासे। सादृश्यता के आधार पर बने ऐसे शब्दों को अपवाद की श्रेणी में रखा जा सकता है। दिनांक 15:11:2022 के नवभारत टाइम्स में एक वाक्यांश है - उन्होंने सवालिये लहजे में कहा। 'सवालिया' विशेषण शब्द भी पूर्णतः अपरिवर्तनीय है अर्थात् यह किसी भी स्थिति में परिवर्तित नहीं होता है जैसे, उन्होंने सवालिया लहजे में कहा, उसने सवालिया निगाहों से देखा या उस पर कई सवालिया निशान लगे हुए थे। आवारा भी एक ऐसा ही बहुप्रयुक्त शब्द है जो अपरिवर्तनीय है जैसे आवारा लड़का, आवारा लड़की, आवारा लड़के, आवारा लड़कियाँ, आवारा पौधे, आवारा फ़सलें, आवारा परिंदे, आवारा जानवर। यदि आवारे लड़के बोलेंगे तो बोलने में भी अच्छा नहीं लगेगा। चुनिंदा किताब, चुनिंदा नज़्में, चुनिंदा कहानियाँ, चुनिंदा अफ़साने, चुनिंदा फ़िल्में, चुनिंदा दुकानदार, चुनिंदा दुकानें अथवा चुनिंदा लोग जैसे विशेषण-विशेष्य शब्द-युग्मों में विशेषण के रूप में प्रयुक्त चुनिंदा भी एक ऐसा ही अपरिवर्तनीय विशेषण शब्द है।

दिनांक 05:05:2023 के दैनिक हिंदुस्तान में एक समाचार में एक वाक्य पढ़ा - पार्टी का कहना है कि स्पेशल स्टाफ के अधिकारी 24 घंटे मुख्यमंत्री के घर के बाहर सादी वर्दी में घूम रहे हैं। यहाँ सादी शब्द का प्रयोग अनुचित है क्योंकि सादा भी एक अपरिवर्तनीय विशेषण शब्द है। काग़ज़ और कपड़े ही सादा नहीं होते लोग भी सादादिल और सादाज़हन होते हैं। पुरुष भी और स्त्री भी दोनों ही। हर चीज़ सादा होती है अर्थात् कोई भी चीज़ सादी नहीं होती। खाना अथवा भोजन भी सादा होता है। नान भी सादा होता है तो रोटी भी सादा होती है। दलिया भी सादा होता है तो खिचड़ी भी सादा होती है। आपने पराँठे तो खाए ही होंगे। कभी सादा तो कभी भरवाँ पराँठे। लेकिन सादे पराँठे अथवा सादी पूरियाँ कभी नहीं खाई होंगी। हम कितने ही पराँठे खाएँ अथवा पूरियाँ ये सब सादा ही रहते हैं। सादा पान खाया होगा लेकिन सादे पान नहीं खाए होंगे। एकवचन में ही नहीं बहुवचन में भी सादा सादा ही रहता है। इसी संदर्भ में उर्दू शायर 'दाग़' का एक शेर याद आ रहा है:

हर अदा मस्ताना सर से पाँव तक छाई हुई,
उफ़ तेरी काफ़िर जवानी जोश पर आई हुई।

यहाँ अदा को मस्ताना बतलाया गया है। अदा एक स्त्रीलिंग शब्द है। यदि मस्ताना विशेषण परिवर्तनीय होता तो हर अदा मस्ताना के स्थान पर हर अदा मस्तानी हो जाता जिससे स्पष्ट होता है कि मस्ताना एक अपरिवर्तनीय विशेषण शब्द है जो फ़ारसी का है। फ़िल्म आरज़ू में हसरत जयपुरी का लिखा एक नग़मा है - ऐ नर्गिसे-मस्ताना बस इतनी शिकायत है। नर्गिस एक फूल का नाम है और नर्गिस आँख को भी कहते हैं। यहाँ नर्गिस महबूब (महबूबा) के लिए इस्तेमाल हुआ है जिसकी आँखें मस्ताना अर्थात् मस्ती में डूबी हुई हैं अथवा जो नर्गिस के फूलों जैसी हैं। उर्दू शायरी में महबूबा को महबूब भी कहा जाता है और महबूब और साक़ी दोनों को पुल्लिंग माना जाता है। दुष्यंत कुमार का एक शेर है:

वे कर रहे हैं इश्क़ पे संजीदा गुफ़्तगू,
मैं क्या बताऊँ मेरा कहीं और ध्यान है।

यहाँ गुफ़्तगू संजीदा है। बातचीत भी संजीदा होती है तो वार्तालाप भी संजीदा होता है। पुरुष और स्त्री दोनों संजीदा होते हैं तो माहौल अथवा हालात भी संजीदा ही रहते हैं। संजीदा भी उपर्युक्त श्रेणी के अंतर्गत ही आता है अतः अपरिवर्तनीय है। इस प्रकार के कुछ अन्य शब्द हैं - उम्दा, ख़ुफ़िया, ज़िंदा, ज़्यादा, दीवाना, मसख़रा, नाकारा, पसंदीदा, पाकीज़ा, पेचीदा, पोशीदा, बोसीदा, अफ़सुर्दा, ख़मीदा, ज़ोलीदा, बुरीदा, शाइस्ता, शिकस्ता, देरीना, बेहूदा, मुर्दा, मौजूदा, लापता, कमरबस्ता, इकतरफा, दुतरफ़ा, दुमंज़िला आदि। खो जाने पर लड़का भी लापता होता है और लड़की भी लापता होती है। अगर बहुत सारी लड़कियाँ हों तो वे भी लापता ही होंगी और बहुत सारे लड़के हों तो वे भी लापता ही रहेंगे। ऐसे ही ज़िंदा शब्द भी अपरिवर्तित रहता है। आदमी भी ज़िंदा होता है तो औरत भी ज़िंदा होती है और लोग भी ज़िंदा होते हैं। लोग भी ज़िंदा होते हैं तो औरतें भी ज़िंदा होती हैं। जानवर भी ज़िंदा होते हैं तो पेड़-पौधे भी ज़िंदा होते हैं।

ऐसा ही एक शब्द है बोसीदा जिसका अर्थ होता है कटा-फटा, पुराना, सड़ा-गला अथवा सड़ा हुआ। बोसीदा शब्द भी लिंग-वचन के अनुसार नहीं बदलता। एक किताब हो तो भी बोसीदा होगी और बहुत सारी किताबें हों तो भी बोसीदा ही रहेंगी। फ़ारिग़ बुख़ारी के इस शेर से स्थिति स्पष्ट हो जाएगी:

याद आएँगे ज़माने को मिसालों के लिए,
जैसे बोसीदा किताबें हों हवालों के लिए।

कर्दा और नाकर्दा भी ऐसे ही शब्द हैं। कर्दा का अर्थ है किया हुआ और नाकर्दा का अर्थ है न किया हुआ। कार्य एक हो या बहुत सारे हों, पुल्लिंग हों अथवा स्त्रीलिंग हों, अच्छे हों या बुरे हों कर्दा व नाकर्दा दोनों ही विशेषण रूप नहीं बदलते। मिर्ज़ा 'ग़ालिब' के निम्नलिखित शेर से भी इसकी पुष्टि होती है:

नाकर्दा गुनाहों की भी हसरत की मिले दाद,
यारब! अगर इन कर्दा गुनाहों की सज़ा है।

आना (आनः) प्रत्यय वाले अरबी-फ़ारसी के शब्द:

सालाना, माहाना, रोज़ाना, क़ातिलाना, अहमक़ाना, सूफ़ियाना आदि। जनाना, मर्दाना (यद्यपि जनानी व मर्दानी शब्द भी इस्तेमाल किए जाते हैं लेकिन ये शब्द विशेषण के रूप में उनके स्त्रीलिंग नहीं अपितु संज्ञा के रूप में इस्तेमाल किए जाते हैं। यदि हम जनाना का जनानी व जनाने विशेषण रूप बनाते हैं तो वे अशुद्ध होंगे लेकिन जनानी सूरत, जनाने कपड़े अथवा मर्दाने कपड़े जैसे प्रयोग चलते हैं।), शायराना, वालिहाना, तिफ़्लाना, दरवेशाना, फ़क़ीराना, सूफ़ियाना, आशिकाना, माशूक़ाना, कलंदराना, आज़ादाना, गुस्ताख़ाना, ज़ालिमाना, वहशियाना, वालिहाना, शातिराना, शाहिदाना, मालिकाना (मालिकों की तरह या जैसा, मिल्कियत का), दोस्ताना (दोस्तों की तरह या जैसा), काफ़िराना (काफ़िरों की तरह या जैसा), शाहाना, शहाना (शाहों/बादशाहों की तरह या जैसा), गदायाना (भिखारियों की तरह या जैसा), क़ातिलाना (क़ातिल की तरह क़त्ल करने के उद्देश्य से, घातक), ग़रीबाना, अमीराना आदि शब्दों का विशेषण के रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता। हमला भी क़ातिलाना होता है तो निगाहें भी क़ातिलाना ही रहती हैं।

इया प्रत्यय वाले अरबी-फ़ारसी के शब्द शौकिया, शर्तिया, मज़ाक़िया, हालिया, इक़बालिया आदि भी अपरिवर्तित रहते हैं। इनके अतिरिक्त ईं अंत वाले शब्द जैसे हसीं, रंगीं, संदलीं व आँ अंत वाले शब्द जैसे जवाँ, मेहरबाँ आदि भी नहीं बदलते।

अरबी-फ़ारसी के आकारांत शब्दों के अतिरिक्त हिंदी के भी कुछ आकारांत विशेषण शब्द हैं जो अपरिवर्तित रहते हैं। इनमें से प्रमुख हैं या अथवा 'इया' अंत वाले शब्द जैसे घटिया, छलिया, बढ़िया, दुखिया, सुखिया, रसिया, लबाड़िया, दूधिया, लंगोटिया, लिफ़ाफ़िया, मजीठिया, केसरिया, तूतिया, मूँगिया, मेहँदिया, हलदिया, हलफ़िया, भूतिया, दूधिया, भोजपुरिया, कन्नौजिया, कलकत्तिया आदि। अनुनासिकांत अथवा याँ अंत वाले काइयाँ जैसे शब्द भी नहीं बदलते। इसके अतिरिक्त वा अथवा आ अंत वाले शब्द जैसे सवाया, भगवा, गेरुआ, गेहुँआ भी अपरिवर्तित रहते हैं। विशेषण के रूप में भगवा, गेरुआ अथवा गेहुँआ जैसे शब्द वैसे

तो अपरिवर्तनीय हैं और प्रायः रंगवाचक विशेष्य शब्द के साथ ही देखे जाते हैं लेकिन विशेषण पदबंध में ये परिवर्तित हो जाते हैं जैसे भगवे रंग का, भगवे वस्त्रों वाला, गेरुए रंग में, गेहुँए रंग का। सवाया भी आकार जैसे शब्द के साथ जुड़कर सवाए आकार का जैसे पदबंधों में प्रयुक्त होता है। इसके अतिरिक्त हाँ अंत वाले शब्द जैसे ललचौहाँ, ललछौहाँ, निचौहाँ तथा वाँ अंत वाले शब्द जैसे जुड़वाँ, ढलवाँ, भरवाँ, सुतवाँ आदि विशेषण शब्द भी नहीं बदलते।

निष्कर्ष: जैसा कि सभी जानते हैं कि कोई भी भाषा व्याकरण के नियमों से विकसित नहीं होती अपितु किसी भाषा के अस्तित्व में आने के बाद ही उसका व्याकरण बनाया जाता है जो उस भाषा के नियमों को स्पष्ट करने के साथ-साथ अपवादों के विषय में भी जानकारी देता है ताकि नियमों के प्रयोग से मानक भाषा में एकरूपता बनी रहे अतः मानक भाषा के स्वरूप को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए सही नियमों की जानकारी व उनका प्रयोग अनिवार्य है। हम अपनी बोलियो व उपबोलियों के विकास के लिए उनको व्यवहार में लाएँ और उनके विकास के लिए प्रयास करें लेकिन हिंदी भाषा के मानक स्वरूप को हर हाल में अक्षुण्ण बनाए रखने का प्रयास करें। वैसे ये भी कटु सत्य है कि हम व्याकरण की अच्छी जानकारी के बावजूद शुद्ध अथवा अच्छी भाषा लिख या बोल नहीं सकते अतः इसके लिए अनिवार्य है कि हम केवल उन रचनाकारों का साहित्य पढ़ें जिनकी भाषा उत्कृष्ट और व्याकरणसम्मत हो।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. भंडारी, मन्नू, एक कहानी यह भी.
2. डॉ. तिवारी, भोलानाथ, मानक हिंदी का स्वरूप.
3. डॉ. तिवारी, भोलानाथ, हिंदी भाषा.
4. वाजपेयी, किशोरीदास, हिंदी शब्दानुशासन.
5. गुरु, कामताप्रसाद, हिंदी व्याकरण.
6. नवभारत टाइम्स (दैनिक) नई दिल्ली, नवभारत टाइम्स दैनिक समाचार पत्र की भाषा का नियमित रूप से अवलोकन व व्याकरणिक विश्लेषण.
7. हिन्दुस्तान (दैनिक) नई दिल्ली, हिन्दुस्तान दैनिक समाचार पत्र की भाषा का नियमित रूप से अवलोकन व व्याकरणिक विश्लेषण.

सीताराम गुप्ता,

ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा,

दिल्ली - 110034

मोबा0 नं0 9555622323

email : srgupta54@yahoo.co.in